914 P
769
M

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI.

1268/1021

Call No.

Accession No. 769

GIPNLK—7/DAND—5-9-60—15,000

B
2011
891.431
J318Sh

* वन्देमातरम *

* शहीदोंकी गरर्जना *

उर्फ

क्रान्ति की लहर

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931
769

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—
डा० रवीसिंह आर्ट पुस्तक बेचने वाला
एजेन्ट—अग्रवाल बुकडिपो खारीबावली देहली।

द्वितीयवार १०००   मूल्य -)

N20/11
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 769
Date 20.12.71
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति आँगना पर।
शस्यश्यामला पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र के निकट हो।
श्री जान्हवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

स्वतंत्र होकर

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
सरल को तजकर गरल का प्याला,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
पड़ी हो हाथों में हथकड़ी गर,
तो स्वर्ग के सुख से लाभ क्या है
नरक के दुःख में निवास निश-दिन,

है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
जो दास होकर मिले भवन में,
सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है वह ॥
सदैव उपवास करके वन वन,
विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
मिले उपाधी या मान पदवी,
जो सेवा करके तो व्यर्थ है सब।
घृणा व अपमान के गढ़े में,
उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

ह !

कब तक पियोगे प्याले, भारत के रहने वाले।
अब आंख खोल देखो, हिन्दुस्तान वाले ॥
ग़ैरोंने तुमको लूटा, सदियों से तुमको मारा।
क्यों बे ख़बर पड़े हो. भारत के नौ निहालो ॥
कपड़ा रहा न तन पर, खाने को कुछ नहीं है।
करते गदा गरी हो, शाहों के नाम वाले ॥
सुन्दर भवन कहाँ थे, रत्नों से जो जड़े थे।
उनका पता नहीं है, सारी गुमान वाले ॥

सन्तान जो तुम्हारा, फिरता है मारी मारी।
करता है आहो ज़ारी, भाषम के नाम वाले॥
आपस की फूट भाई, हम पर यह रङ्ग लाई।
तब हो ता मार खाई, ऊँचे निशान वाले॥
धर्मात्मा वही हैं, करते जो देश सेवा।
विनती यही है मेरी- भारी ईमान वाले॥

विजय होगी।

उठो अब सत्य पर भाई विजय होगी बिजय होगी।
कटादो अपना सर भाई विजय होगी विजय होगी॥
अगर वह गन मशीनों की धमकियां तुमको देते हैं।
बढ़ादो बढ़के निज छाती विजय होगी बिजय होगी॥
अगर वह हथकड़ी बेड़ी दिखायें तो दिखाने दो।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी॥
मेरे प्यारे शहीदो अब नहीं है काम देरी का।
दिखादो चाल चौताई विजय होगी बिजय होगी॥
अगर इस जङ्ग में चूके समझ लेना बुरा होगा।
न पिछड़ो देखकर खाई बिजय होगी विजय होगी॥
इधर हैं शेर गांधी जी उधर हैं शोसकों का दल।
बनो मोहन के अनुयायी बिजय होगी बिजय होगी॥

गजल

टोडी बच्चा हाय हाय टोडी बच्चा हाय हाय।

टोडी बच्चा वह कहलाता, जिसका खाय उसे गुर्राता॥

फूले टुकड़े खाय २ टो० ॥

खा २ माल बने अलमस्ता जुदा बनावे अपना रस्ता॥

मूछों पर बल लाय २ ॥ टो०

बना पिंजर हिन्दकी माटीका, फिर क्या हक उसको डाटीका

डंडे मारे ठाय २ टो०

अभी वक्त है समझो भाई. मिलकर जग मैं करो भलाई॥

काल दबावे आय ॥ टो०

मलहार निहालदे

अरी बीबी छोड़ो न महलों का बास,

मरदौं को देदो चूड़ियाँ॥

घूंघट तो छाड़ैं बहना बालमां,

अरी बीबी तुम चलो सरे बाजार॥ मरदों०

रोटी बनावें री बहना बालमां।

अरी बीबी हम तुम नमक बनाय॥ मरदों०

वस्त्र विदेशी पै बहना चल डटो।

अरी बहना कौड़ी का बिकने दो नाय॥ मरदौं

धरनो तो देदो री शराब पे ॥

अरी बहना कौड़ी की बिकने ना पाय ॥ मरदों

एक डर मानो करतार का ।

अरी बीबी दूजे से डरिये नाय ॥ मरदों०

लाठी औ गोली से बहना मत डरो ।

अरी बीबी भूलो जा जेल मंझार ॥ मरदों०

मलहार

अरी बीबी लूटा हैं भारत देश, फिरंगिया डाकू आन के ॥

पहिले तो लूटी कारी गरी ।

अरी बीबी लूटा हैं सकल व्योपार ॥ फि०

मर्द निहत्थे बहना कर दिये ॥

अरी बीबी छीने हैं सब हथियार ॥ फि० ॥

१४४ धारा फुलझड़ी ॥

अरी बीबी जी चाहे जहाँ दी चलाय ॥ फि०

सोना तो लन्दन डाकू लेगये ॥

अरी बीबी कागज दिये हमारे हाथ ॥ फि०

पवन और पानी देते मोलको ॥

अरी बीबी सांभर पे लगाया महसूल ॥ फि०

मक्खन तो मक्खन बीबी खागये ॥

अरी बीबी छाछ बिकाय दई मोल, फि०

सबही बिदेशी चीज़े होगई,

अरी बीबी देश तो धरो हैं मिटाय, फि०

मनतरंग

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है ॥
करें आजाद भारत को यही एक धुन समाई है ॥
नहीं है ज्ञान क्या उनको कि भारत वीर भूमि है ।
करे बरबाद हम उनको कि जिनमे दुश्मनाई है ॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना ॥
मिटेंगे हम मिटाकरके शपथ हमने यह खाई है ॥
है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिनसे ॥
कटे आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदाई है ॥
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल मतजाना ॥
नही अपमान सह सकते जो भारत के फिदाई हैं ॥

गजल

नही पीनी नहीं पीनी शराब जालिम नही पीनी ।
वेद कुरान इंजील पुकारे. है यह बड़ी खराब, जा०
कोई धर्म इसे भला कहता, बुरा कहे अहबाब । जालिम०
पी बेहोश पड़े नाली में, कुत्ते करें पेशाब, जालिम०
रण्डी के घर जाय शराबी, औंधा पड़े शिताब, जालिम०
कुत्ते मूंह चाटें गालों पे, मक्खी का बजे रबाब, जालिम०
जब कूड़ी पे गिरे शराबी. गूका मिले खिजाब, जा०
कोई भूल इसे मत पीना, चाहें मुफ्ती मिले जनाब, जा०

झंडा गायन

ऊँचा हुआ तिरंगा हिन्दोस्तां का झंडा ।
ऊँचा रहे हमेशा हिन्दोस्ताँ का झंडा ॥
सुन्दर है फूल जैसा तोभी तो दुशमनोंके,
आखों में है खटकता हिंदोस्थां का झंडा ॥
सर को उठा के देखो फर फर हवा में देखो ।
फहरा रहा है कैसा हिंदस्थां का झंडा ॥
खुशियां मचीं हैं घर २ दीपावली है घर घर ॥
उड़ता नज़र जो आया हिन्दोस्तां का झंडा ॥
आज़ादीये वतन के सब मिलके गीत गायें ।
ऊँचा रहे खुदाया हिन्दोस्ता का झंडा ॥
कहते हैं सच यह दिलसे इसमें नहीं बनावट ।
हमको है जां से ज्यादा हिंदोस्तां का झंडा ॥
अब फूट और गुलामी कूप में जा गिरेगा ।
महताब बनके चमका हिंदोस्ताँ का झंडा ॥
रंग आगया किसी पर रँग उड़गया किसी का ॥
उड़ता हुवा जो देखा हिंदोस्ताँ का झंडा ।
हक़ से न लेंगे ज्यादा घबराये न कोई भी ॥
दुशमन नहीं किसीका हिंदोस्तां का झंडा ।
पहले सफ़ेदी सबज़ो है सुलहओ दरगुजर की ॥
पीछे है खून जैसा हिंदोस्तां का झंडा ॥
हिंदोस्तां के वीरो भारत के नौ जवानो ।
होने न पाये नीचा हिंदोस्तां का झंडा ॥
सबमिल के इसके नीचे आओ क़सम यह खाये ।
जाँ से रखेंगे प्यारा हिंदोस्तां का झंडा ॥

स्वाधीन प्रेस दिल्ली